विश्व न्याय मन्दिर

यह वह युग है, जब ईश्वर की दया का सागर मानवजाति के समक्ष उड़ेल दिया गया है, वह युग जब उसकी कृपा के सूर्य ने मानव पर अपनी प्रभा बिखेर दी है, वह युग जिसमें ईश्वर की उदार कृपा के बादलों की छाँव समस्त मानवजाति को मिली है। अब वह समय है जब प्रेम और सहअस्तित्व के जीवनदायी बयार, मित्रवत् सम्बन्ध और परोपकार के प्राणदायी जल से निराश हृदयों को प्रफुल्लता तथा जीवंतता प्रदान की जाये।

—बहाउल्लाह

मूल्य/धर्मार्थ : 1 पैसा
(केवल बहाईयों में वितरण हेतु)

बहाई समाचारपत्र

वर्ष : 53 अंक 4 प्रकाशन : प्रत्येक माह की 8 तारीख

अप्रैल 2017 बहाई वर्ष : 174

जयपुर में आयोजित गतिविधियों की झलक

• राज्य बहाई परिषद जयपुर की ओर से बापू नगर स्थित बहाई हाउस में बहाई पवित्र स्थलों के बारे में जानकारी बढ़ाने के लिए तथा मित्रो को तीर्थयात्रा के बारे में जागरुक करने के लिए एक विशेष कार्यशाला का आयोजन किया गया।

इस विशेष अवसर पर पवित्र भूमि हाइफा, इज़रायल से पधारे श्रीमान और श्रीमती जमशेद उपस्थित थे। गौरतलब है कि श्री जमशेद पिछले सत्रह वर्षों से पवित्र भूमि पर अपनी सेवायें दे रहे हैं और इसी क्रम में पिछले तीन वर्षों से पूरी दुनिया में घूम–घूम कर बहाई पवित्र स्थलों के बारे में प्रस्तुतियां दे रहे हैं, और इसी क्रम में वे जयपुर में उपस्थित बहाई समुदाय को सम्बोधित कर रहे थे। उन्होंने बहाई पवित्र स्थलों से जुड़ी काफी रोचक जानकारियां दी, कई कहानियों के माध्यम से बहाउल्लाह के जीवन के बारे में बताया। इजरायल के अक्का नामक शहर में कितनी यातनाएं उन्होंने मानवजाति के लिए सही, कितने साल वो अपने परिवार से दूर रहे, बहाई बगीचे जो कि विश्व के सुन्दरतम बगीचों में से हैं के बारे में वर्णन किया ये सब तमाम जानकारियाँ उन्होंने अपनी प्रस्तुति में दी।



बहाई पवित्र स्थलों पर आयोजित कार्यशाला के प्रतिभागी

• राज्य बहाई प्रशिक्षण संस्थान की ओर से एक किशोर मेले का आयोजन जगतपुरा स्थित लोटस पब्लिक स्कूल में किया गया, इसमें जगतपुरा में चल रहे सभी 9 किशोर समूहों के 63 प्रतिभागियों ने भाग लिया। सभी समूहों ने अपने समूह का एक नाम रखा।

सभी किशोरों के माध्यम से किशोर समूह का परिचय दिया गया, तत्पश्चात किशोरों द्वारा उद्धरण, सांस्कृतिक कार्यक्रम तथा

शेष पृष्ठ 4 पर



किशोर मेले में भाग लेने वाले प्रतिभागी

इस अंक में

भारत में सहायक मंडल सदस्यों का सम्मेलन

जनवरी में नवनियुक्त सहायक मंडल सदस्यों के दो सम्मेलन क्रमशः नई दिल्ली और चेन्नई में आयोजित किये गये, जिनमें भारत के विभिन्न राज्यों में निवास करने वाले तथा आस–पड़ोस के देशों, नेपाल, श्रीलंका, अफगानिस्तान और बांग्लादेश के सहायक मंडल सदस्यों ने हिस्सा लिया। ये सम्मेलन दुनिया भर में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र के मार्गदर्शन में आयोजित किये जाने वाले 23 सम्मेलनों के हिस्सा थे। अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा जनवरी से अप्रैल 2017 के बीच ऐसे 23 सम्मेलन आयोजित किये जा रहे हैं।

भारत में आयोजित किये गये दो सम्मेलनों में अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र का प्रतिनिधित्व अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार एंतोनेला डीमैन्टो और श्रीमती उड़नसेरवन ग्रैनफार के अतिरिक्त अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार श्री प्रवीण मल्लिक द्वारा किया गया। सम्मेलन में एशिया में निवास करने वाले सभी सलाहकार श्रीमती ग्लोरिया जावेद, श्री दृगपाल सिंह, डा. जब्बार ऐदलखानी, श्री राजन सावंत और श्री ओमिद सियोशानसियान की गरिमामय उपस्थिति और मार्गदर्शन ने दोनों सम्मेलनों को रोचक और ज्ञानवर्धक बना दिया।

दिल्ली का सम्मेलन बहाई उपासना मंदिर के प्रांगण में आयोजित किया गया, जबकि चेन्नई का सम्मेलन वहाँ के एक खूबसूरत हॉल में। सम्मेलन का समारम्भ विश्व न्याय मंदिर के संदेश से किया गया जिसमें सर्वोच्च संस्था ने कहा है कि सहायक मंडल सदस्य और उनके सहायक वैश्विक योजना का वर्णन करने, इसके लक्ष्यों को पूरा करने और इसे स्पष्ट तौर पर समुदाय के समक्ष ले जाने में एक निर्णायक भूमिका अदा करते हैं। विचारों की एकता और इसका लचीलापन सम्मेलन के माध्यम से एक ऐसे प्रेम और एकता के भाव को प्रोत्साहित कर गया जो दुर्लभ ही देखने को आज की दुनिया में मिलता है।

संदेश में कहा गया है कि सहायक मंडल सदस्यों की महत्वपूर्ण भूमिका को देखते हुये विश्व न्याय मंदिर ने उनकी लिस्ट में और 144 लोगों को शामिल किया है। इस प्रकार विश्व भर में सहायक मंडल सदस्यों की संख्या अब बढ़कर 1,134 हो गयी है विश्व न्याय मंदिर के संदेश को पढ़ने के बाद सम्मेलन को सम्बोधित अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र का 6 जनवरी 2017 का संदेश पढ़ा गया, जिसमें सहायक मंडल सदस्यों और उनके सहायकों से कहा गया है कि वे समुदाय द्वारा पिछले बीस सालों के दौरान अर्जित ज्ञान और अनुभव को सबलित करें और मानवजाति को उसकी नियति तक पहुँचने में इसके कदमों से कदम मिलाते हुए उनकी आध्यात्मिक ऊर्जा को बढ़ायें। संदेश में 1134 नवनियुक्त सहायक मंडल सदस्यों को धर्मभुजाओं द्वारा अपनाये गये रास्ते पर कदम बढ़ाने के लिये

शेष पृष्ठ 2 पर



नई दिल्ली में सहायक मंडल सदस्यों के लिए आयोजित सम्मेलन में भाग लेने वाले मित्रगण

समाचारचित्र



8 मार्च 2017 को मुंबई में अंतर्राष्ट्रीय महिला दिवस मनाया गया। इस समारोह में आसपास के क्षेत्र के स्थानीय सरकारी सहायता वाले स्कूलों में पढ़ने वाले बच्चों के 160 अभिभावकों ने इसमें अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। सलाहकार राजन सावंत ने मूल गतिविधियों के बारे में एक प्रेरणात्मक प्रस्तुति दी। इस अवसर पर सहायक शिक्षक निरीक्षक श्रीमती रंजना कुलकर्णी राव भी उपस्थित थीं।



राज्य बहाई परिषद पश्चिम बंगाल ने जॉयपुर क्लस्टर के तीमंगदा में कोष शिक्षा पर एक सम्मेलन का आयोजन किया, जिसमें 33 मित्रगणों ने अपनी प्रतिभागिता दर्ज की। इनमें से अधिकतर ट्यूटर, शिक्षक और अनुप्रेरक के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं।



बिहार में खगड़िया क्लस्टर के विजयनगर समुदाय में बच्चों की बहाई कक्षा की शिक्षिका पूजा कुमारी ने एक भक्तिपरक बैठक का आयोजन किया, जिसमें कुछ अन्य शिक्षक और कक्षा के बच्चों के साथ–साथ उनके परिवार के सभी सदस्य इसमें शामिल हुए।

भारत में सहायक मंडल सदस्यों का सम्मेलन

पृष्ठ 1 का शेष

प्रेरित किया गया है। अपनी 'इच्छा–पत्र और वसीयतनामा' में अब्दुल–बहा धर्मभुजाओं के कर्तव्यों की व्याख्या करते हुये लिखते हैं – "दिव्य सुरभि को चतुर्दिक फैलाने, मनुष्यों के हृदय को उन्नत करने, सीख अथवा जानकारी को बढ़ावा देने, सभी मनुष्यों के चरित्र को उच्च करने और बराबर तथा हर एक परिस्थिति में दुनियावी चीजों से अनासक्त रहने तथा पवित्र बने रहने – ये कर्तव्य हैं धर्मभुजाओं के। वे अपने आचरण में ईश्वर के भय को प्रदर्शित करें, अपने मन–वचन और कर्म से शुद्ध रहें।

चेन्नई की सभा में अपने विचार व्यक्त करती हुई अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार एन्टोनेला डिमौंट ने सहायक मंडल सदस्यों को सम्बोधित करते हुये कहा कि आप वैसी संस्था को अपनी सेवा दे रहे हैं, जिसकी परिकल्पना शोगी एफेंदी द्वारा की गई थी जो धर्मभुजाओं के काम–काज में मदद करने के उद्देश्य से नियुक्त किये जाते थे। इसलिये, बराबर यह याद रखना चाहिये कि आप उनके ही पगचिह्नों पर चल रहे हैं। उन्होंने कहा, "जब आप अपने–अपने क्षेत्रों में काम कर रहे हों तो बराबर यह ध्यान रखें कि आपके काम की प्रकृति आध्यात्मिक है तथा व्यक्ति, संस्था और समुदाय के क्षमता–निर्माण में आपको बहुत बड़ी भूमिका निभानी है। हमारी बातचीत केवल बातचीत के लिए नहीं होनी चाहिये, बल्कि सारगर्भित और अर्थपूर्ण होनी चाहिये। आपको खुद तय करना होगा कि किस प्रकार आप युवाओं अथवा वयस्कों के साथ बातें करते हैं। एक ओर आपका वार्तालाप युवाओं और उनके परिवारों के साथ होता है तो दूसरी ओर प्रशासनिक संस्थाओं और प्रशिक्षण संस्थान के साथ आवश्यक परामर्श कर उन उपायों की तलाश करनी होती है जिनसे समुदाय–निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ होती है। हमें बराबर याद रखना चाहिये कि हम समुदायों का निर्माण कर रहे हैं और इस निर्माण–काल में सहायक मंडल सदस्यों और उनके सहायकों की भूमिका और ज़िम्मेदारी इस अर्थ में बढ़ जाती है कि समूहों द्वारा प्रभुधर्म को स्वीकार करने की प्रक्रिया के वे प्रेरक तत्व होते हैं, प्रक्रिया को वे आगे बढ़ाते हैं।

सलाहकार महोदया ने सहायक मंडल सदस्य तथा उनके सहायकों की अनेक ऐसी ज़िम्मेदारियों की चर्चा की जिनके बगैर विकास की कल्पना भी नहीं की जा सकती। वे सहयोगी होते हैं, प्रशिक्षक होते हैं, हम सफर होते हैं, प्रेरक होते हैं और सबसे ऊपर एक सत्यनिष्ठ बहाई होते हैं।



चेन्नई में आयोजित सहायक मंडल सदस्यों के सम्मेलन में भाग लेने वाले प्रतिभागी

सम्मेलन में नासिक और मालेगाँव की सभाओं ने अपने–अपने पड़ोसी क्षेत्रों का ब्योरा दिया तो श्रीलंका और नेपाल के सहायक मंडल सदस्यों ने भी अपने–अपने क्षेत्र के अनुभव सुनाये। सभी अनुभव रोचक थे, प्रेरणा देने वाले थे।

सलाहकार ग्लोरिया जावेद ने प्रभुधर्म का संदेश जन–जन के मन तक पहुंचाने की बात करते हुये कहा, "प्रशिक्षण संस्थान जैसा यंत्र जिसके हाथ में हो वह विकास और विश्वास की बातें आसानी से कर सकता है। प्रशिक्षण संस्थान के सहारे वे अच्छी तरह प्रभुधर्म का

शेष पृष्ठ 3 पर

भारत में सहायक मंडल सदस्यों का सम्मेलन

पृष्ठ 1 का शेष

संदेश दे सकते हैं। वे परिवारों से मिल सकते हैं, युवाओं को नई राह दिखला सकते हैं। प्रसार के एक लम्बे चरण की चर्चा करते हुए सलाहकार महोदया ने सुझाव दिया कि परिवारों के साथ घुलने–मिलने से परस्पर प्रेम बढ़ता है, लोग स्टडी सर्कल में आते हैं और हमें वह अंतर्दृष्टि प्राप्त होती है, जिसे लोगों से साझा कर हम एक–दूसरे से सीखते हैं। आने वाले युगल जन्मोत्सवों की चर्चा करते हुए उन्होंने कहा कि ये ऐसे अवसर होंगे, जिनके लिये अभी से समूचे गाँव को तैयार किया जा सकता है कि वे कार्यक्रमों का जिम्मा लें, आयोजक के रूप में अपनी भूमिका निभायें और फिर मुख्य धारणा से जुड़ जायें, क्योंकि जीवन की सार्थकता इसके आध्यात्मिक पक्ष को उजागर करने में ही है।

चेन्नई में अंतर्राष्ट्रीय सलाहकार प्रवीण मल्लिक ने सहायक मंडल सदस्यों को यह कहकर मार्गदर्शन दिया कि बड़ी संख्या में युवाओं को प्रशिक्षित किये जाने की बहुत बड़ी ज़रूरत है। युवा जब सशक्त होंगे तब वे अपने गाँव/अपने क्षेत्र के लोगों को आध्यात्मिक रूप से सशक्त बना पायेंगे। जब क्षेत्र/गाँव आध्यात्मिक रूप से सशक्त होगा तब समुदाय–निर्माण की प्रक्रिया प्रारम्भ होगी, एक ऐसा समुदाय जो अपना विकास खुद अपने–आप करेगा। बाहर से कोई व्यक्ति अथवा शक्ति नहीं आयेगी। गाँव के लोग व्यक्तियों, संस्थाओं और एक–दूसरे के साथ मिलकर गाँव का विकास करते हैं।

दोनों स्थानों पर, दिल्ली और चेन्नई में तीन–तीन दिनों के सम्मेलन के दौरान प्रतिभागियों को विश्व न्याय मंदिर के 23 नवम्बर 2016 का विश्व के बहाईयों को सम्बोधित संदेश तथा अंतर्राष्ट्रीय शिक्षण केन्द्र द्वारा सम्मेलन के प्रतिभागियों को सम्बोधित 6 जनवरी, 2016 का संदेश गहनता के साथ पढ़ने और समझने का मौका मिला और बाद में इन दो संदेशों से प्राप्त प्रेरणास्पद विषयों पर विस्तार से अलग–अलग टुकड़ियों में परामर्श किया गया। सुदृढ़ीकरण की सामग्रियां अलग से इन सम्मेलनों के लिये तैयार की गई थीं जिन्हें छोटे–छोटे ग्रुपों में बैठकर पढ़ा और समझा गया और उनसे मार्गदर्शन प्राप्त किया गया। सुदृढ़ीकरण के कुछ विषय थे – पास के क्लस्टर के ग्रुप के साथ काम करना, बच्चों की कक्षा और किशोर सशक्तिकरण कार्यक्रम को एक निश्चित स्तर तक ले जाया जाये, मानव संसाधन विकास को मजबूत करना और गाँवों तथा आस–पड़ोस के क्षेत्रों में समुदाय–निर्माण की गतिविधियों की शुरूआत।

सम्मेलनों के दौरान कुछ अनुकरणीय उदाहरण भी प्रस्तुत किये गये। जैसे, त्रियम्बकेश्वर में पहले कुछ मित्र संदेश देने गये, 80 युवाओं से मिले, जिनके माध्यम से 120 युवाओं के सम्पर्क में आये और कुछ ही दिनों में इनमें से 70 युवाओं ने अपने–आप को संस्थान प्रक्रिया से जोड़ा। प्रसन्नता की बात यह है कि इन 70 युवाओं में अधिकांश महिलायें हैं।

भुवनेश्वर के मित्रों ने अपना अनुभव साझा करते हुये कहा कि पड़ोस के तीन प्रमुख ग्रुपों के साथ काम करने के बाद अब महसूस किया जाने लगा कि समुदाय–निर्माण की प्रक्रिया शुरू हो चुकी है। वहाँ अब सुबह–सबेरे लोग प्रार्थना के लिये एकत्रित होते हैं, पुस्तक एक, तीन और पाँच के लिये चलाये गये अभियान में शामिल हुये और अब स्थानीय स्तर पर मानव संसाधन भी उपलब्ध होने लगे हैं।

कुछ महत्वपूर्ण विषय जिन पर छोटे–छोटे ग्रुपों में चर्चा की गई, वे थे–विघटन और संघटन की वर्तमान प्रक्रिया के दौरान सहायक मंडल सदस्यों की भूमिका, सहायकों द्वारा सहयोग, घनीभूत होती गतिविधियों वाले क्षेत्र में कार्यनीति, स्टडी सर्कल के शिक्षकों को तैयार करना, मील के पहले पत्थर को पार कर चुके समुदायसमूहों के लिये आगे की कार्यनीति क्या और कैसी होनी चाहिये, बड़ी संख्या में युवाओं को सेवा के कार्यों से जोड़ना, किशोर कार्यक्रम स्थापित करना ताकि बच्चों को नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा दी जा सके और सतत् सहयोग प्रदान करते रहना ताकि वह क्लस्टर दूसरे मील के पत्थर पर पहुँच सके।

बहाई विवाह



श्री कोंग्खाम भुमेश्वोर सिंह सुपुत्र श्री कोंग्खाम इंद्रजीत सिंह और कोंग्खाम इबेचौबी देवी का विवाह सुश्री सोइबम नूरी देवी सुपुत्री एलंग्बम निंगोल सोइबम और जती देवी के साथ 13 फरवरी 2017 को स्थानीय आध्यात्मिक सभा, पनगंताबी के तत्वावधान में हिन्दू और बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



बिहार में ननौरा गांव के श्री सुरेन्द्र पाण्डेय की सुपुत्री सुश्री खुशबू पाण्डेय और बिहारशरीफ के हरगावाँ समुदाय के श्री नीतीश कुमार पांडेय सुपुत्र स्वं. भोलानाथ पाण्डेय का विवाह 4 मार्च, 2017 को बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।



श्री डेनियल स्टोल्लर और सुश्री तूहिना गुप्ता का विवाह 10 दिसम्बर, 2016 को लखनऊ स्थानीय आध्यात्मिक सभा के तत्वावधान में बहाई विधिविधान के अनुसार सम्पन्न हुआ।

Regd. No. DELHIN / 1966 / 04204
New Delhi P.S.O.
Delhi Postal Regd No. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
Licensed to post without pre-payment No. U (C)-52/2015-16-17

रिक्तस्थान

पंचगणी स्थित बहाई अकादमी को युवा कार्यकर्ताओं की जरूरत है

सह–निर्देशक – 2 पद (शोध और कार्यक्रम)

कार्यक्रम अधिकारी – 1 पद

25 से 35 आयु वर्ग के क्षमतावान बहाई युवा, जो सेवा–भावना से प्रेरित हों, अकादमी में सेवा देने के लिये आवेदन कर सकते हैं। सेवा के लिये चुनाव करते समय निम्नलिखित बातों पर ध्यान दिया जायेगा :

योग्यतायें : संस्थान–प्रक्रिया का अनुभव और प्रभुधर्म का पर्याप्त ज्ञान, छोटे–बड़े समूहों में बात करने की क्षमता, हिन्दी, अंग्रेजी और मराठी (प्राथमिकता नहीं) में लिखने–बोलने की क्षमता, टीम में काम करने की क्षमता, विश्लेषणात्मक, आलोचनात्मक और रचनात्मक सोच।

आध्यात्मिक गुण : विश्वासपात्रता, नैतिक और आध्यात्मिक सत्यनिष्ठा, धैर्य और विनम्रता, सहयोग की भावना, निःस्वार्थता और आत्म–नियंत्रण, ईमानदारी, अनुशासन और आचरण की दृढ़ता और अकादमी को लम्बे समय तक सेवा देने की प्रतिबद्धता, सीखने की प्रवृत्ति।

शैक्षिक योग्यता :

शिक्षा, विज्ञान अथवा सामाजिक कार्य में मास्टर डिग्री

अन्य आवश्यक कौशल और क्षमतायें

इच्छुक व्यक्ति को बहाई अकादमी के सम्बन्ध में जानकारी हो और वह अकादमी द्वारा संचालित किये जा रहे विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों का प्रारम्भिक ज्ञान रखता हो तो इस आवेदक की अतिरिक्त योग्यता मानी जायेगी। आवेदक को प्रोग्राम, प्लानिंग, कार्यशाला, रिफ्रेशर वर्कशॉप और प्रारम्भिक परिचय के साथ अकादमी के अन्य कामों का ज्ञान भी अतिरिक्त योग्यता के रूप में माना जायेगा। इसके अलावा अकादमी की पत्रिका, समाचार बुलेटिन और शोध सामग्री का प्रकाशन आदि भी आवेदक की जिम्मेवारी होगी।

यथाशीघ्र आवेदन करें ।

निदेशक

बहाई अकादमी पंचगणी (महाराष्ट्र)

ई–मेल–director@bahaiacademy.org



भोपाल के बरकतुल्लाह विश्वविद्यालय के मनोविज्ञान विभाग द्वारा आयोजित एक राष्ट्रीय सेमिनार में एक स्मारिका का विमोचन भी किया गया, जिसमें बहाई दृष्टिकोण पर आधारित भोपाल के श्री सचिन पटेल का लेख ''आज के बच्चे भावी समाज के भाग्य'' को भी प्रकाशित किया गया। इस अवसर पर भारत के कई बड़े शिक्षाविदों के अलावा गणमान्य नागरिक व विश्वविद्यालय के छात्र उपस्थित थे।

जयपुर में आयोजित गतिविधियों की झलक

पृष्ठ 1 का शेष

नाटकों के द्वारा विभिन्न मानवीय गुणो को जैसे सत्यवादिता, विनम्रता, न्याय, सहनशीलता आदि को प्रदर्शित किया। मेले के दौरान किशोर समूह में चल रही पुस्तक से सम्बन्धित कुछ सवालों को पूछा एक दूसरे से बहुत कुछ सीखा। कार्यक्रम को सफल बनाने में सभी ने अपना सहयोग दिया। अन्त में किशोर युवा सशक्तिकरण कार्यक्रम की सयोजक सुश्री कविता ने उपस्थित सभी लोगों का धन्यवाद



बापू नगर में आयोजित अय्याम–ए–हा के कार्यक्रम में कुछ मित्रगण प्रार्थनायें करते हुए

गया, जिसमें सभी किशोरों ने बढ़–चढ़कर हिस्सा लिया। इसके बाद कुछ अनुप्रेरकों ने अपना अनुभव साझा किया, इसी दौरान सुश्री राविया ने किशोर मेले के महत्व के बारे में बताया, इससे सभी अनुप्रेरको किया और बताया की उनके ही सहयोग से ये कार्यक्रम संपन्न हो पाया है। इस किशोर मेले में कुल 113 प्रतिभागी थे।

• जयपुर में बापू नगर स्थित बहाई भवन और सागानेर बहाई



सागानेर में आयोजित अय्याम–ए–हा के कार्यक्रम के प्रतिभागी

को बहुत कुछ सीख मिली, अनुप्रेरक द्वारा किशोरो को एक खेल खिलाया गया, फिर सभी किशोरों के समूह में चल रही पुस्तकों (सम्पुष्टि कि सुरभि, आषा की किरण, आस्था की चेतना) से सम्बन्धित एक–एक पोस्टर जो किशोर बनाकर लाये थे वो सभी समूहों द्वारा साझा किया गया तथा इससे सभी समूहों ने भवन में भी अय्याम–ए–हा का दिन हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरूआत अलग–अलग भाषाओं में प्रार्थनाओं से हुई। कार्यक्रम के दौरान कुछ खेलों का भी आयोजन किया गया व विजेताओ को पुरस्कार प्रदान किये गये।

कुल पृष्ठ संख्या–4
बहाई समाचारपत्र के स्वामित्व एवं अन्य विषयों से संबंधित फार्म – 4, नियम 8

समाचार का नाम : बहाई समाचारपत्र
jft ua%DELHIN / 1966 / 4204 यू नं. (C)-52/2015-16-17
डी.एल. DL (ND) 11/6036/2015-16-17
प्रकाशक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
(बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1)
प्रकाशन स्थान : बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1

मुद्रक का नाम : सुशील कुमार (भारतीय)
बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–1
मुद्रण स्थान : डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–20
उन व्यक्तियों के नाम जो समाचारपत्र स्वामी हों : राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा को इसका स्वामित्व प्राप्त है, जो सोसायटीज़ एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है।

Licenced to post without Pre-Payment Posted at CPSO New Delhi on 10/11.04. 2017
Sender's Address:
6, Shrimant Madhavrao Scindia Marg.
New Delhi - 110 001 - INDIA

स्वामी, भारत के बहाईयों की राष्ट्रीय आध्यात्मिक सभा, जो सोसायटीज एक्ट के अंतर्गत पंजीकृत है, के लिए प्रकाशक, मुद्रक : सुशील कुमार के द्वारा डोरा ऑफसेट, सी–54, ओखला इंडस्ट्रीयल इस्टेट, फेज़–1, नई दिल्ली–110 020 से मुद्रित एवं बहाई भवन, 6 श्रीमंत माधव राव सिंधिया मार्ग, नई दिल्ली–110 001 से प्रकाशित (सम्पादक : सुशील कमार)